

NATURE: INDIA

The “Nature” is a storehouse of joy, peace and pleasure. Nature is like a Philosopher's stone that has the potential to transform its surroundings with its presence itself. Nature can provide a new lease of life to a fatigued mind or a weary body. The kind of comfort and consolation that can be felt in the lap of nature is described by the poets, bands and wandering minstrels. The flowing rivulets, the sounding cataracts, the whispering winds, the joyful flowers and the lofty mountains are only some of the manifestations of that divine beauty.

The Bliss of being touched by any aspect of the vast Nature can be seen in the world's greatest poetic and philosophical expressions. There can be no better mediation than being in touch with the Nature. It has a healing touch of its own. The lovers of Nature immerse themselves in listening to the melodious songs of larks, watching the clouds moving majestically across the sky, and manage to witness the joyful dance of peacock on a rainy day. They can spend hours looking at the starry heavens and absorb the beauty of a rainbow in the sky. They do not forget to see the sublime in the ephemeral.

Where Nature is a source of joy, it is also a great teacher. The fruitful trees teach us to be humble; the mountains teach us to be strong and firm; the flowers teach us to smile and blossom even when we are surrounded by the thorns of life. The wildlife in Nature teach us harmony and balance in life. It reveals the oneness of life.

Nature is permeated with the same soul that dwells in man. There is a kinship between man and nature. But our relationship with nature is also of imbalance and overuse. Nearly every step in human history has unfortunately been accompanied with a leap in environmental degradation. Apart from

achieving stability for ourselves and our kin, we also have an obligation to maintain the environment, as we depend on the resources and services it provides. Our cognitive ability and understanding of nature obliges us to maintain the integrity of the environment. In order for the Earth to retain its balance, it is important that we do not overstep our bounds as a species. This requires a universal effort to reevaluate our relationship with nature and make adjustments as needed. It is important to recognise a rippling of consequences that are being faced because of Man's intervention with the nature.

Every generation is required to be conscious of their responsibility towards nature. To bring the awareness in the students, Department of Posts chose Nature: India as a topic for Stamp Design Competition organised across the country for the Republic Day 2017. The participants were to send original entries on the theme “Nature: India”. Based on selected entries Stamps, Miniature Sheet, Maxim Cards, First Day Cover and Brochure are being released. The designs on the Stamps, Miniature Sheet, Maxim Cards, First Day Cover & Brochure are based on the entries submitted by Mr. Krishna Debnath, Mr. S. Keerthivassan, Mrs. Tripti Dutta, Ms. Pooja, Mr. Souvik Datta, Ms. Souramita Bhaumik, Mr. Suyash Goyal, Ms. Debasmita Chakraborty, Mr. Akshat Pamawat, Ms. Mehr Vig, Ms. Yamini K, Mr. Divyansh Sharma, Ms. Aparajita Biswas, Ms. Jetshree Sharma and Ms. V. Aishwaria.

Credits:-

Text	: Based on the material available on internet
Stamp / Miniature Sheet / FDC / Brochure / Cancellation Cachet	: Ms. Nenu Gupta, based on selected paintings submitted by participants

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

प्रकृति: भारत NATURE:INDIA



विवरणिका BROCHURE

प्रकृति : भारत

“प्रकृति” आनंद, शांति और सुख का भंडार है। किसी दार्शनिक की दृष्टि में प्रकृति उस पारस पत्थर के समान है जिसकी उपस्थिति मात्र से ही उसके आस-पास का माहौल बदल जाता है। प्रकृति, किसी थके-हारे मन को अथवा क्लान्त तन को नया जीवन प्रदान कर सकती है। प्रकृति के आगोश में महसूस किए जा सकने वाले सुकून और चैन का बेहतरीन चित्रण कवियों, संगीतकारों और घूमन्तू चारणों द्वारा किया गया है। बलखाती नदिकाएं, कल-कल करते झरने, सरसराती हवाएं, खिलखिलाते पुष्प और ऊंचे पर्वत ऐसे दिव्य सौंदर्य की अभिव्यक्ति की कुछ मिसाल हैं।

प्रकृति की किसी भी नियामत की अनुभूति को विश्व की महानतम काव्यात्मक और दार्शनिक अभिव्यक्तियों में देखा जा सकता है। प्रकृति के सान्निध्य से बेहतर कोई अन्य साथ नहीं। इसका स्पर्श मात्र ही स्वास्थ्यवर्धक है। प्रकृति प्रेमी अपने आपको, पक्षियों के सुरीले गीत सुनकर, आकाश में उड़ते बादलों को देख कर तथा बारिश के दिन मोर का मदमस्त नृत्य देखकर आनंदित महसूस करते हैं। वे, तारों से जड़े गगन को घंटों निहार सकते हैं तथा आकाश में उभरे हुए इन्द्रधनुष की सुंदरता को अपने में समाहित कर लेते हैं। यहां तक कि वे, क्षणिक अवर्णनीय सौंदर्य को देखने से भी नहीं चूकते।

जहां प्रकृति एक ओर आनंद का साधन है, वहीं दूसरी ओर यह एक महान गुरु भी है। फलों से लदे वृक्ष हमें नम्र होने की सीख देते हैं, पर्वत हमें सुदृढ़ और अविचल होने की सीख देते हैं, फूल हमें, जीवन की कठिनाइयां रूपी कांटों से घिरे रहने के बावजूद भी मुस्कुराने और खिलने की सीख देते हैं। प्रकृति का वन्यजीवन हमें जीवन में तालमेल और सामंजस्य बनाने की सीख देता है। यह जीवन की एकात्मकता का द्योतक है।

प्रकृति में भी वही आत्मा वास करती है जो मनुष्यों में करती है। मनुष्य और प्रकृति के मध्य अटूट संबंध है। किन्तु प्रकृति के साथ हमारा संबंध, असंतुलन और अतिप्रयोग का है। मानव के इतिहास में, दुर्भाग्यवश लगभग हर कदम पर पर्यावरण का हास हुआ है। अपने स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए स्थिरता प्राप्त करने के अलावा,

हमारा दायित्व है कि हम पर्यावरण का रख-रखाव करें, क्योंकि हम इस पर्यावरण से प्राप्त होने वाले संसाधनों और सेवाओं पर आश्रित हैं। प्रकृति के प्रति हमारी ज्ञानात्मक क्षमता और समझ-बूझ हमें पर्यावरण के संरक्षण के प्रति हमारे दायित्व का एहसास भी कराती है। यह महत्वपूर्ण है कि एक प्रजाति के रूप में हमें अपनी सीमाओं का अतिलंघन नहीं करना चाहिए ताकि पृथ्वी का संतुलन बना रहे। इसके लिए, प्रकृति के साथ हमारे संबंध का मूल्यांकन करने का सार्वभौमिक प्रयास करने और आवश्यकतानुसार व्यवस्था करने की आवश्यकता है। प्रकृति के साथ मानव द्वारा किए जाने वाले हस्तक्षेप के फलस्वरूप जिन परिणामों का हम सामना कर रहे हैं, उनकी गम्भीरता को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है।

प्रत्येक पीढ़ी को प्रकृति के लिए अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत होने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए डाक विभाग ने, गणतंत्र दिवस 2017 के लिए देशभर में डाक-टिकट डिजाइन प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए “प्रकृति : भारत” विषय का चयन किया। प्रतिभागियों को “प्रकृति : भारत” विषय पर मूल प्रविष्टियां भेजनी थीं। चयनित प्रविष्टियों के आधार पर डाक-टिकट, मिनीयेचर शीट, मैक्सिम कार्ड, प्रथम दिवस आवरण और विवरणिका जारी की जा रही हैं। डाक-टिकट, मिनीयेचर शीट, मैक्सिम कार्ड्स, प्रथम दिवस आवरण और विवरणिका के डिजाइन श्री कृष्ण देबनाथ, श्री एस कीर्तिवासन, श्रीमती तृप्ति दत्ता, सुश्री पूजा, श्री सौविक दत्ता, सुश्री सौरामिता भौमिक, श्री सुयश गोयल, सुश्री देबस्मिता चक्रवर्ती, श्री अक्षत पमावत, सुश्री मेहर विग, सुश्री यामिनी के, श्री दिव्यांश शर्मा, सुश्री अपराजिता बिस्वास, सुश्री जेत्तरी शर्मा और सुश्री वी. ऐश्वर्या द्वारा प्रस्तुत प्रविष्टियों पर आधारित हैं।

आभार:-

मूलपाठ : इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/मिनीयेचर शीट/
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/
विरूपण : श्रीमती नीनू गुप्ता,
प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत
तथा चुनी गई पेटिंग्स पर
आधारित



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा (6)
Denomination	:	500 p (6)
मुद्रित डाक टिकटें	:	301590 प्रत्येक
Stamps Printed	:	301590 each
मुद्रित मिनीयेचर शीट	:	1.0 लाख
Miniature Sheet Printed	:	0.1 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00